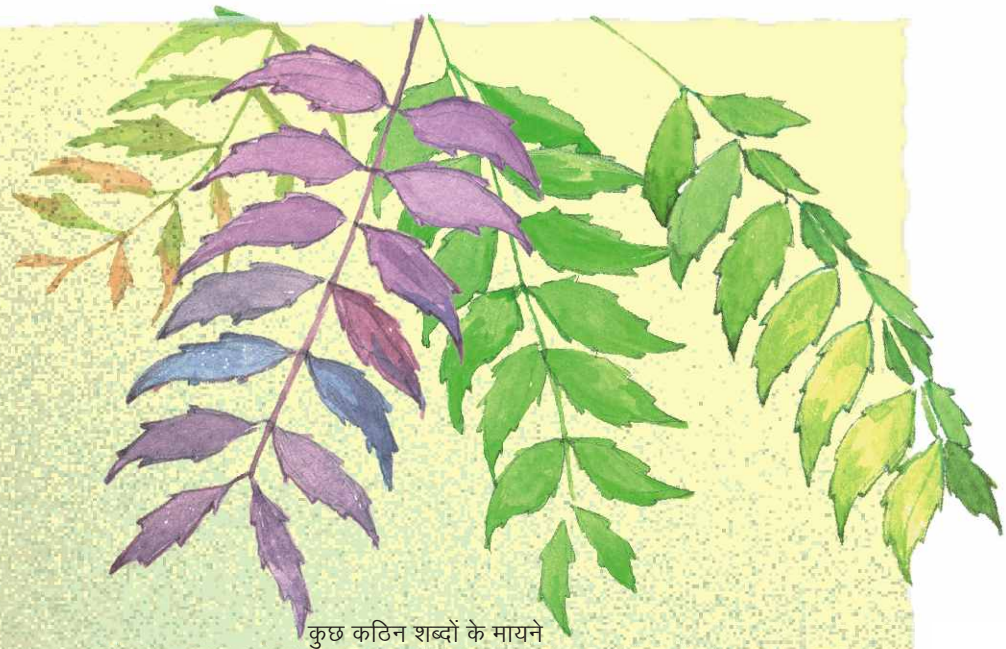

कुछ कठिन शब्दों के मायने

पात - पत्ते
गाँछ - पेड़
उजराई - उजड़ना
गम्हराना - सुगंध फैलाना
गरे - निकलना, छूटना
सेनुराई - सिन्दूरी
ठोंग - चोंच से प्रहार
आस - आशा

नीम का रंग सावा-सावा

मैंने जब नीम के रंग से खेलकर देखने की कोशिश की तो पंजाबी लोकगीतों में एक खास हल्के हरे रंग के लिए इस शब्द की याद आई – सावा। हल्के रंग के पान के पत्ते का रंग, नीम की नई पत्तियों का रंग – सावा!

सदाबहार नीम। चाहें तो पूरा साल सावे रंग से ही पेंट करते रहें। मैंने पत्तियों को पीसकर एक दिन के लिए पानी में भिगो दिया था। फिर उन्हें दस पन्द्रह मिनट तक उबाला तो पक्का सावा रंग निकला। पहली पेंटिग नीम, जासौन और हल्दी से बनाई। इसके बाद दूसरे रंगों में नीम के रंग घोलकर नई-नई रंगतें उभरती चली आईं।

नीम के तैयार रंग में फिटकरी घोलने से फ्लोरोसेंट पारदर्शी हरा मुझे मिला। मैंने कई बार बिना रोशनी की किसी पेंटिंग पर इस रंग की एक परत पेंट करके देखा तो पाया कि वह पेंटिंग चमक उठी। मुझे ऐसा भी लगा कि नीम का यह रंग पक्के रंगों में से है और छानने वाला कपड़ा अच्छा खासा रंग पकड़ बैठता है।

मैंने शायद पहले इसी कॉलम में लिखा था कि जासौन या गुलाब के तैयार रंग में मीठा सोडा घोल देने से भी हरा रंग मिलता है। तुम प्रयोग करके देखना कि लाल से जो हरा बनता है और नीम से जो सावा बनता है, उनमें क्या अन्तर है। मैंने कई लोगों से सुना है कि दीवार पर मांडना बनाने के लिए कई ग्रामीण कलाकार हरे के लिए गिलकी के पत्तों का उपयोग करते हैं। मैंने खुद यह प्रयोग करके नहीं देखा क्योंकि अभी तक मुझे गिलकी के पत्ते मिल नहीं पाए हैं। और जैसा कि मैंने पिछली बार लिखा था, सेमल के लाल फूल से मुझे लौकी जैसा हरा रंग संयोग से ही मिल गया था।

अभी तो हरे के साथ बस इतना ही खेल हुआ है। क्या पता आगे क्या मिलेगा, सावन के अँधे को जिसे हरा ही हरा नज़र आ रहा है?

● तेजी ग्रोवर

निमिया के पात झरे!

टीनबंधु पाण्डेय

निमिया के पात झरे
हुए हरे,
उजराई गाँछ।
ठोंगों पर बौर भरे,
राग ढरे
गम्हराई गाँछ।
महुआरी बास घिरे,
रंग गरे,
सेनुराई गाँछ।
दिन बीतें आस करे,
धीर धरे,
अलसाई गाँछ
निमिया के पात झरे।

चित्र : सौम्या मैनन

मेरी किताब में
एक घड़ी रहती है
जब देखो तब
बन्द पड़ी रहती है

मैं पेंसिल से
रोज़ मिलाया करती हूँ
सही समय पर
उसको लाया करती हूँ।